REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 10 | JULY - 2022

"अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके आत्मबोध के प्रभाव का अध्ययन"

Manoj Kumar[1] and Dr. Renu Goyal[2]
[1]Research Scholar, Department of Education, I.I.M.T University Meerut (U.P).
[2] Associate Professor, College of Education, I.I.M.T University Meerut (U.P).

सारांश–

प्रत्येक बालक बालिका में चिंतन, मनन एवं कल्पना करने की क्षमता भिन्न भिन्न होती है जिसके आधार पर वह विभिन्न प्रकार के कार्य संपादित कर जीवन पथ पर अग्रसर होता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर आत्मबोध का सक्रिय रूप से प्रभाव पड़ता है। प्रस्तुत शोध में अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके आत्मबोध के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों पर आत्मबोध प्रशिक्षण तथा शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण प्रशासित कर सांख्यिकी गणना द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि अनुसूचित जन जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके आत्मबोध का धनात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः विद्यार्थियों को शैक्षिक भ्रमण, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियां, सेमिनार तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं में शामिल कर उनके आत्मबल में वृद्धि के अवसर प्रदान कर उपलब्धि में सुधार किया जाना चाहिए।

प्रस्तावना–

समान शैक्षिक वातावरण में शिक्षा ग्रहण करने के बावजूद प्रत्येक बालक बालिका की सोच एवं व्यवहार में अंतर पाया जाता है। प्रायः विद्यार्थियों के बौद्धिक शक्तियों एवं शैक्षिक उपलब्धियों पर वातावरण एवं वंशानुक्रम के साथ-साथ बुद्धि, प्रेरणा, आर्थिक सामाजिक स्तर,पढ़ने की आदत एवं आत्मबोध जैसे अनेक कारको का सक्रिय रूप से प्रभाव पड़ता है। इन समस्त कारको में आत्म बोध एक प्रमुख कारक है जो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। आत्मबोध व्यक्ति के स्वयं को देखने का तरीका है या उसके सोचने अनुभव करने के तरीकों को भी दर्शाता है। आत्म बोध का सीधा संबंध व्यक्ति की सोच से होने के साथ-साथ मानसिक परिपक्वता से भी होता है। आत्मबोध बालक बालिका की शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक या नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।.

आत्मबोध व्यक्ति विशेष के खास गुण, आचरण एवं सोच को प्रदर्शित करता है। छात्रों के व्यक्तित्व के विकास में स्वयं के बोध की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है। अतः शिक्षक प्रक्रिया के लिए यह आवश्यक है कि बालक के

आत्मबोध का अधिकाधिक विकास किया जाए। साथ ही शिक्षकों को छात्रों के आत्मबोध का ज्ञान होना चाहिए जिससे छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि की जा सके।

शोध के उद्देश्य–

शोध के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना, 2.अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध का अध्ययन करना, 3.अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना,
4. अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मबोध की तुलना करना,
5. अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्मबोध में संबंध ज्ञात करना।
6.अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्मबोध पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना,
7. अनुसूचित जाति के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना ।

परिकल्पना–

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना निम्नलिखित हैं–

1. अनुसूचित जाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
2. अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में नहीं पाया जाएगा।
3. अनुसूचित जाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध में सार्थक अंतर नहीं होगा।
4.अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध में सार्थक अंतर नहीं होगा।
5. अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
6. अनुसूचित जन जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
7. अनुसूचित जन जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मबोध में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
8 . अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्मबोध में धनात्मक सहसंबंध पाया जाएगा।
9.अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के हाथों पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

परिसीमन–

प्रस्तुत अध्ययन को झारखंड राज्य के गढ़वा शहरी क्षेत्र और गढ़वा जिले के अंतर्गत दुबे मरहटिया ग्राम के ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के कक्षा दसवीं में अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्र-छात्राओं तक परसीमित किया गया है।

शोध विधि–

इस समस्या के अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है.

न्यादर्श–

इस प्रस्तुत लघु शोध में अध्ययन में न्यादर्श मे चयनित माध्यमिक विद्यालय ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों से लिया गया है, जिसमें अनुसूचित जनजाति में 25 छात्र 25 छात्रा ग्रामीण क्षेत्र के,25 छात्र ,25 छात्रा अनुसूचित जनजाति के ,शहरी के 25 छात्र 25 छात्रा अनुसूचित जनजाति और 25 छात्र 25 छात्रा अनुसूचित जनजाति का चयन किया गया

उपकरण –

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित उपकरण का प्रयोग किया गया है–

1. आत्मबोध परीक्षण मापनी– डॉ जीपी शैरी , डॉक्टर आरपी वर्मा, डॉक्टर पीके गोस्वामी,

2– स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण मापनी– कुल 30 वैकल्पिक प्रश्न है।

चर–

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में निम्नलिखित चर हैं–

1. स्वतंत्र चर– आत्मबोध,

2. आश्रित चर –शैक्षिक उपलब्धि।

सांख्यिकीय विश्लेषण –

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता(t मान) तथा सहसंबंध की गणना की गई।

विश्लेषण के आधार पर परिकल्पना क्रमांक– 9 स्वीकृत की जाती है क्योंकि अनुसूचित जनजाति के बालक एवं बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानो की साथर्कता का मान सारणीगत मान से कम है। इसलिए सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत शोध में संकलित आंकड़ों से प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार है–

1. अनुसूचित जाति , अनुसूचित जनजाति वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर नहीं पाया गया।

2. अनुसूचित जनजाति ,अनुसूचित जाति वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध में अंतर नहीं पाया गया। 3. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर नहीं पाया गया

4. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्मबोध में अंतर नहीं पाया गया।

5. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्माबोध के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया

6. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्म बोध पर उनके लिंग का प्रभाव पाया गया।

7. अनुसूचित जनजाति के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर उनके लिंग का कोई प्रभाव नहीं पाया ।

संदर्भ–

१. आदित्य, प्रमोद (1994)–आदिवासी छात्र छात्राओं के आत्मबोध का उनकी उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

२. भारथी, जी ए.(1984)– ए स्टडी ऑफ सेल्फ कॉन्सेप्ट एंड अचीवमेंट ऑफ अर्ली एडोलसेंट (फोर्थ सर्वे ऑफ़ रिसर्च इन एजुकेशन 1983–88 वॉल्यूम नंबर –1)पेज न–34।